क्या भारत वैश्वीकरण के अंत के लिए तैयार है?

UPSC प्रासंगिकता

- **सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र II:** बहुपक्षवाद, वैश्विक शासन, राज्य की क्षमता।
- **सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र III:** वैश्विक व्यापार, औद्योगिक नीति, असमानता, मानव पूंजी।

IAS-PCS Institute

चर्चा में क्यों?

हाल के वैश्विक घटनाक्रम — जैसे कि बढ़ता संरक्षणवाद (Protectionism), व्यापार का सशस्त्रीकरण (Weaponization of Trade), बहुपक्षीय संस्थानों का कमजोर होना और लेन-देन वाली कूटनीति (जैसे टैरिफ की धमकी और प्रतिबंध) — उदारवादी वैश्वीकरण व्यवस्था के पतन का संकेत देते हैं। यह भारत के लिए एक महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा करता है: क्या भारत संस्थागत और आर्थिक रूप से उत्तर-वैश्वीकरण (Post-globalisation) की 'व्यापारिक-राष्ट्रवाद' (Mercantilist) दुनिया के लिए तैयार है?

पृष्ठभूमि: उदार वैश्वीकरण से व्यापारिक-राष्ट्रवाद (Mercantilism) तक

वैश्वीकरण को अक्सर केवल मुक्त व्यापार तक सीमित माना जाता है, लेकिन ऐतिहासिक रूप से यह एक राजनीतिक व्यवस्था रही है जिसने यह तय किया कि राज्य बाजारों को कैसे नियंत्रित करेंगे और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कैसे व्यवहार करेंगे।

1. **प्रारंभिक वैश्वीकरण:** यह औपनिवेशिक और दमनकारी था, जो संसाधन निष्कर्षण और असमान व्यापार पर आधारित था।
2. **द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की व्यवस्था:** इसने कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाएं पेश कीं:
    - राज्यों की संप्रभु समानता।
    - बहुपक्षीय संस्थान (UN, IMF, विश्व बैंक, WTO)।
    - मानक संयम (Normative restraint), जहाँ शक्तिशाली राष्ट्र भी कुछ नियमों से बंधे थे। इस प्रणाली ने शक्ति को वैधता के साथ जोड़ा, जिससे सहयोग, विकास और गरीबी उन्मूलन संभव हुआ। हालाँकि, अब यह 'मानक संयम' समाप्त हो गया है। वैश्विक व्यवस्था पुनः **व्यापारिक-राष्ट्रवाद (Mercantilism)** की ओर लौट रही है, जहाँ व्यापार को राष्ट्रीय शक्ति और दबाव के साधन के रूप में उपयोग किया जा रहा है।

वैश्वीकरण को कमजोर करने वाले अनपेक्षित परिणाम

1. आर्थिक असमानता और लोकलुभावनवाद (Populism)

पूंजी पर मिलने वाला रिटर्न मजदूरी की वृद्धि से कहीं अधिक तेज रहा, जिससे असमानता गहरी हुई।

- **वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएं:** कुछ क्षेत्रों में विनिर्माण (Manufacturing) खत्म हो गया, जबकि अन्य जगहों पर औद्योगिक विकास केंद्रित हो गया।
- बढ़ते प्रवासन और नौकरी की असुरक्षा ने लोकलुभावन और अंतर्मुखी राजनीति को जन्म दिया।
- **प्रभाव:** वैश्विक सहयोग को लाभ के बजाय बोझ माना जाने लगा, जिससे बहुपक्षवाद के प्रति समर्थन कमजोर हुआ।

2. चीन का उदय और भू-राजनीतिक व्यवधान

चीन ने उदार राजनीतिक मानदंडों को स्वीकार किए बिना वैश्विक अर्थव्यवस्था में खुद को एकीकृत किया।

- चीन ने वैश्विक बाजारों और तकनीक तक पहुंच के साथ-साथ पूंजी, श्रम और सूचना पर कड़ा राज्य नियंत्रण बनाए रखा।
- चीन के निर्यात-आधारित और 'अतिरिक्त क्षमता' (Excess-capacity) वाले मॉडल ने बड़े व्यापार अधिशेष पैदा किए और भारत सहित कई गरीब देशों में औद्योगिकीकरण को बाधित किया।
- समय के साथ, चीन एक वैकल्पिक विकास मॉडल के रूप में उभरा, जिसने पश्चिमी मान्यताओं को चुनौती दी कि आर्थिक खुलापन अनिवार्य रूप से राजनीतिक उदारीकरण की ओर ले जाता है।

IAS-PCS Institute
Result Mitra
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

नई वैश्विक वास्तविकता

असमानता और चीन के उदय ने वैश्विक दृष्टिकोण को बदल दिया है:

- अब वैश्वीकरण को 'त्याज्य' (Expendable) माना जाता है।
- राज्य उदार मूल्यों के ऊपर संप्रभुता को प्राथमिकता दे रहे हैं।
- **मुख्य प्रवृत्तियां:** प्रवासन का राजनीतिकरण, रणनीतिक संरक्षणवाद, अंतरराष्ट्रीय सहायता में कमी और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर विकासशील देशों की सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति का कमजोर होना।

उभरती व्यवस्था में भारत की स्थिति

"नजरअंदाज करने के लिए बहुत बड़ा, लेकिन प्रभाव डालने के लिए बहुत गरीब"

भारत एक संरचनात्मक दुविधा का सामना कर रहा है:

1. **रणनीतिक आकार:** बाजार की क्षमता के कारण भारत की दृश्यता तो है।
2. **सीमित प्रभाव:** कम प्रति व्यक्ति आय और कमजोर राज्य क्षमता इसके प्रभाव को सीमित करती है।

पिछले डेढ़ दशक में, भारत अपने जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend) को उत्पादक क्षमता में बदलने में विफल रहा है, जिसके परिणामस्वरूप **अनौपचारिकता (Informality), रोजगारहीन विकास और गहरा सामाजिक स्तरीकरण** बढ़ा है।

भारत के लिए अवसर के क्षेत्र

बाधाओं के बावजूद, भारत के पास कुछ तुलनात्मक लाभ हैं:

- **डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI):** आधार, UPI, ONDC।
- **नवीकरणीय ऊर्जा:** सौर ऊर्जा और ग्रीन हाइड्रोजन।
- **सेवा क्षेत्र:** आईटी और पेशेवर सेवाएं।
- **लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण:** स्थानीय शासन की क्षमता।

www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

मुख्य चुनौती: निम्न राज्य क्षमता (Low State Capacity)

आर्थिक विकास के अनुपात में निम्नलिखित क्षेत्रों में निवेश नहीं हुआ है:

- स्वास्थ्य में निरंतर सार्वजनिक निवेश की कमी।
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव।
- **व्यापारिक-राष्ट्रवादी (Mercantilist) दुनिया में, कमजोर राज्य अप्रासंगिक हो जाते हैं, चाहे उनका आकार कितना भी बड़ा क्यों न हो।** मजबूत संस्थानों, सामाजिक सद्भाव और विकास के लाभों को साझा करने के लिए एक विश्वसनीय 'सामाजिक अनुबंध' के बिना, भारत का वैश्विक नेतृत्व का दावा केवल बयानबाजी तक सीमित रह सकता है।

आगे की राह: उत्तर-वैश्वीकरण की दुनिया के लिए तैयारी

1. **राज्य क्षमता का निर्माण:** स्वास्थ्य, शिक्षा और प्रशासनिक क्षमता में भारी निवेश करें।
2. **विकास के आधार को व्यापक बनाना:** विशिष्ट वर्ग-केंद्रित विकास से हटकर श्रम-गहन (Employment-intensive) विस्तार पर ध्यान दें।
3. **रणनीतिक औद्योगिक नीति:** राष्ट्रीय क्षमताओं के अनुरूप चुनिंदा क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करें।
4. **सामाजिक एकजुटता को मजबूत करना:** राजनीतिक स्थिरता बनाए रखने के लिए असमानता को कम करें।
5. **व्यावहारिक बहुपक्षवाद:** वैश्विक स्तर पर वहीं जुड़ें जहाँ राष्ट्रीय हित मेल खाते हों।

निष्कर्ष

नियमों के बजाय 'शक्ति' से संचालित उत्तर-वैश्वीकरण की दुनिया में, भारत का भविष्य उसके आकार या नारों पर नहीं, बल्कि उसके **संस्थानों, मानव पूंजी और राज्य की क्षमता** पर निर्भर करेगा। 'विश्वगुरु' बनने की आकांक्षाओं को केवल बयानबाजी के बजाय आर्थिक क्षमता और मजबूत सामाजिक नींव पर आधारित होना चाहिए।

UPSC मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न (सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र II / III)

प्रश्न: "नियम-आधारित उदार व्यवस्था के रूप में वैश्वीकरण तेजी से एक 'व्यापारिक-राष्ट्रवादी' (Mercantilist) और शक्ति-संचालित विश्व व्यवस्था में बदल रहा है।" इस संदर्भ में, वैश्वीकरण के अंत के प्रति भारत की तैयारियों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। उभरती वैश्विक व्यवस्था में प्रासंगिक बने रहने के लिए भारत के लिए कौन से संरचनात्मक सुधार आवश्यक हैं? (250 शब्द)